गांधी
एक अध्ययन

प्रो. (डॉ.) सी. बी. गाँधे
अजय कुमार | अरविंद कुमार

Bharati

गांधी : एक अध्ययन

संपादक
प्रो. (डॉ.) सी. बी. भांगे
अजय कुमार, अरबिंद कुमार

भारती पब्लिकेशंस
नई दिल्ली 110002

Copyright © संपादक

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted, in any form or by any means, without permission. Any person who does any unauthorised act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

Disclaimer: The views expressed in the articles are those of the Authors/contributors and not necessarily of the editors and publisher. Authors/contributors are themselves responsible for any kind of plagiarism found in their articles and any related issues.

First Published, 2020

ISBN : 978-93-89657-95-1

Printed in India:

BHARTI PUBLICATIONS

4819/24, 3rd Floor, Ansari Road, Darya Ganj
New Delhi-110002

Ph. : 011-2324-7537
Mobile : +91-989-989-7381
E-mail : bhartipublications@gmail.com
info@bharatipublications.com
Website : www.bhartipublications.com

Published by Onkar Bharti for Bharti Publications.
Layout by : Neeru Graphices, S.P. Kaushik Enterprises

अनुक्रम

प्रस्तावना — v

1. गाँधी जी का जीवन परिचय — 1-6
   श्री मनोज जोशी
2. गांधीजी का जीवन परिचय — 7-15
   सोनू रजक
3. मोहनदास करमचंद गाँधी से महात्मा गांधी : सविनय अवज्ञा का प्रभाव — 16-22
   डॉ. आर. एस. भाकुनी
4. गांधीवाद और अहिंसा — 23-27
   संगीता कुमारी साह
5. भारतीय समाज में गाँधी और अहिंसा — 28-31
   डॉ. नीतू पवांर
6. महात्मा गाँधी और आदर्श राज्य — 32-38
   डॉ. धीरज वर्मा (सोनी)
7. गाँधीवादी आदर्श राज्य की परिवर्तनोंमुखी विश्व में प्रासंगिकता — 39-44
   संजीव कुमार सिंह
8. महात्मा गाँधी : स्वराज की संकल्पना — 45-51
   अनुराग तिवारी
9. गांधी और सत्याग्रह — 52-56
   सहा. प्रा. देविदास रिठे

9

गांधी और सत्याग्रह

सहा. प्रा. देविदास रिठे*

प्रास्ताविक

आज जिस हिंसा, आतंक एवं उपभोक्तावाद की होड के वातावरण मे हम जी रहे है वहाँ सर्वाधिक कमी है चौन और शांति की स ऐसे मे गांधी और ज्यादा प्रासंगिक नजर आते है स गांधीजी के विचारो ने दुनिया भर के लोगो को न सिर्फ प्रेरित किया है बल्की करुणा, सहिष्णुता और शांति के दृष्टीकोण से भारत और दुनिया को बदलने मे भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई उन्होंने अपने समस्त जीवन मे सिद्धांतो और प्रथाओ को विकसित करणे पर जोर दिया। उन्होने विश्व के बडे नैतिक और राजनीतिक नेताओ जैसे मार्टिन ल्युथर किंग, नेल्सन मंडेला और दलाई लांबा आदी को भी प्रेरित किया।

उद्देश्य

1 गांधीजी के सत्याग्रह के अर्थ के बारे मे जनना

2 राष्ट्रीय आंदोलन मे सत्याग्रह का महत्व जनना

3 वर्तमान मे सत्याग्रह कितना प्रासंगिक है यह जनना

संशोधन पद्धती

इस संशोधन के लिये ऐतिहासिक तथा अनुभववादी विधी का उपयोग किया है।

* इतिहास विभाग, श्री शिवाजी महाविद्यालय, परभणी, महाराष्ट्र

महात्मा गांधी का भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में अहम योगदान रहा है। जनवरी 1915 में गांधीजी दक्षिण अफ्रीका से भारत लौट आए। इससे पहले उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में शोषण, अन्याय एवं रंगभेद की नीति के विरुद्ध सत्याग्रह आंदोलन किया था। इसमें उन्हें सफलता मिली स स्वदेश लौटने पर भारत माता को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराने के लिए महात्मा गांधी ने कई आंदोलन किए, जिसमें सत्याग्रह मुख्य था। गांधी जी के आंदोलन की सफलता का सबसे बड़ा कारण उनके साथ जनता का हो जाना था।

गांधीजी के अहिंसात्मक आंदोलन और सत्याग्रह का जन्म दक्षिण अफ्रीका में ही हुआ। सन 1906 में दक्षिण अफ्रीका सरकार ने भारतीयों के पंजीकरण के लिए एक अपमानजनक अध्यादेश जारी किया। इस समय गांधी जी दक्षिण अफ्रीका में ही थे। यह अध्यादेश गांधी जी व वहां पर रहने वाले अन्य भारतीयों को मंजूर नहीं था। सितंबर 1906 में जोहन्सबर्ग में गांधी जी के नेतृत्व में पहला अहिंसात्मक आंदोलन हुआ जिसे सत्याग्रह के नाम से जाना गया। आखिर आफ्रिका सरकार को गांधीजी के आंदोलन के सामने झुकना पडा और भारतीयो के प्रती जो अन्यायपूर्ण अध्यादेश को हटाना पडा।

सत्याग्रह का अर्थ

''सत्याग्रह'' का मूल अर्थ है सत्य के प्रति आग्रह (सत्य अ आग्रह) सत्य को पकड़े रहना और इसके साथ अहिंसा को मानना। अन्याय का सर्वथा विरोध (अन्याय के प्रति विरोध इसका मुख्या वजह था) करते हुए अन्यायी के प्रति वैरभाव न रखना, सत्याग्रह का मूल लक्षण है। हमें सत्य का पालन करते हुए निर्भयतापूर्वक मृत्य का वरण करना चाहिए और मरते मरते भी जिसके विरुद्ध सत्याग्रह कर रहे हैं, उसके प्रति वैरभाव या क्रोध नहीं करना चाहिए।

''सत्याग्रह'' में अपने विरोधी के प्रति हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं है। वे अहिंसा वादी थे। धैर्य एवं सहानुभूति से विरोधी को उसकी गलती से मुक्त करना चाहिए, क्योंकि जो एक को सत्य प्रतीत होता है, वहीं दूसरे को गलत दिखाई दे सकता है। धैर्य का तात्पर्य कष्टसहन से है। इसलिए इस सिद्धांत का अर्थ हो गया, 'विरोधी को कष्ट अथवा पीड़ा देकर नहीं, बल्कि स्वयं कष्ट उठाकर सत्य का रक्षण।'

महात्मा गांधी ने कहा था कि सत्याग्रह में एक पद 'प्रेम' अध्याहत है। सत्याग्रह मध्यमपदलोपी संधि है। सत्याग्रह यानी सत्य के लिए प्रेम द्वारा आग्रह। (सत्य + प्रेम + आग्रह = सत्याग्रह)

गांधी जी ने लार्ड इंटर के सामने सत्याग्रह की संक्षिप्त व्याख्या इस प्रकार की थी–"यह ऐसा आंदोलन है जो पूरी तरह सच्चाई पर कायम है और हिंसा के उपायों के एवज में चलाया जा रहा।" अहिंसा सत्याग्रह दर्शन का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है, क्योंकि सत्य तक पहुँचने और उन पर टिके रहने का एकमात्र उपाय अहिंसा ही है। और गांधी जी के ही शब्दों में "अहिंसा किसी को चोट न पहुँचाने की नकारात्मक (निगेटिव) वृत्तिमात्र नहीं है, बल्कि वह सक्रिय प्रेम की विधयक वृत्ति है।"

सत्याग्रह में स्वयं कष्ट उठाने की बात है। सत्य का पालन करते हुए मृत्यु के वरण की बात है। सत्य और अहिंसा के पुजारी के शस्त्रागार में "उपवास" सबसे शक्तिशाली शस्त्र है। जिसे किसी रूप में हिंसा का आश्रय नहीं लेता है, उसके लिए उपवास अनिवार्य है। मृत्यु पर्यंत कष्ट सहन और इसलिए मृत्यु पर्यत उपवास भी, सत्याग्रही का अंतिम अस्त्र है।" परंतु अगर उपवास दूसरों को मजबूर करने के लिए आत्मपीड़न का रूप ग्रहण करे तो वह त्याज्य है : आचार्य विनोबा जिसे सौम्य, सौम्यतर, सौम्यतम सत्याग्रह कहते हैं, उस भूमिका में उपवास का स्थान अंतिम है।

"सत्याग्रह" एक प्रतिकारपद्धति ही नहीं है, एक विशिष्ट जीवनपद्धति भी है जिसके मूल में अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अस्तेय, निर्भयता, ब्राहचर्य, सर्वधर्म समभाव आदि एकादश व्रत हैं। जिसका व्यक्तिगत जीवन इन व्रतों के कारण शुद्ध नहीं है, वह सच्चा सत्याग्रही नहीं हो सकता। इसीलिए विनोबा इन व्रतों को "सत्याग्रह निष्ठा" कहते हैं।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम मे सत्याग्रह का प्रयोग

सन् 1915 में जब गांधी जी भारत आए, तो देश वासियों ने उनका भव्य स्वागत किया। गांधी जी इससे पहले दक्षिण अफ्रीका में अपने अहिंसात्मक सत्याग्रह का कई बार सफल प्रयोग कर चुके थे। स्वदेश लौटने पर कुछ दिन उन्होंने देश का भ्रमण कर स्थिति का जायजा लिया। इसके बाद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जैसी संस्था को पूर्ण स्वतंत्रता का लक्ष्य देकर संघर्ष में कूद पड़े।

महात्मा गांधी ने राष्ट्रीय आंदोलन की दिशा को नया मोड़ दिया। वे केवल एक राजनीतिक संघर्ष के पथप्रदर्शक नहीं थे, बल्कि उन्होंने हिंसा के युग में अहिंसा जैसे अद्वितीय नैतिक बल एवं नई कार्य-तकनीक का अधिरोपण किया। उस दौर में जब सभी राष्ट्रीय आंदोलनों में हिंसा का समावेश था तब उनका स्वाधीनता संघर्ष पूरी तरह अहिंसात्मक था। वे व्यावहारिक राजनीति में आदर्शवाद लेकर आए तथा इसकी वैधता का सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया।

गांधी जी के आगमन के पूर्व भारत का स्वतंत्रता संग्राम चाहे कांग्रेस हो या क्रांतिकारी, समाज के निश्चित वर्गों तक ही सीमित था। गांधी जी ने सर्वप्रथम पूरे भारत की यात्रा की एवं विभिन्न वर्गों की समस्याओं को जाना। उन्होंने चंपारण एवं खेड़ा सत्याग्रह के द्वारा किसानों एवं मजदूरों की समस्याओं को उठाया।

असहयोग एवं सविनय अवज्ञा आंदोलन के द्वारा उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन के जनाधर को बढ़ाया जिसमें किसान, मजदूर, महिलाएँ, छात्र तथा अल्पसंख्यक सभी शामिल हुए। लोगों में स्वतंत्रता की भावना का विकास हुआ तथा जनसामान्य में राजनीतिक शिक्षा का प्रसार हुआ। उनके रचनात्मक कार्यों, जैसे- शराबबंदी, शिक्षा का भारतीयकरण, खादी को प्रोत्साहन, अस्पृश्यता उन्मूलन के लिये अभियान तथा हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिये कार्य करने के कारण उनकी छवि अंग्रेजों के साथ-साथ सामाजिक बुराइयों से भी लड़ने वाले नेता की बनी।

गांधी जी का अहिंसावादी दर्शन इस मत पर आधारित था कि आंदोलन के हिंसक चरित्र में सरकार बल प्रयोग कर जनता के प्रतिरोध एवं आत्मबल को भयानक दमन से शांत कर देती है जो भावी आंदोलन के लिये अनुचित होगा। अतः उन्होंने संघर्ष-विराम-संघर्ष की रणनीति के तहत समझौतावादी दृष्टिकोण अपनाते हुए एक ओर जनता की बलिदानी भावना को बनाए रखा तो वहीं, दूसरी ओर सरकार को वार्ता के लिये भी बाध्य किया।

जब आंदोलन अहिंसक हो और इसे व्यापक जनसमर्थन प्राप्त हो तो, सरकार के समक्ष बातचीत से समस्या सुलझाने के अलावा कोई और विकल्प नहीं रह जाता है। अतः सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान स्वयं वायसराय लॉर्ड इरविन ने गांधी जी से बात की जिसके फलस्वरूप गांधी जी द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने लंदन गए।

अत: यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय आंदोलन के अहिंसात्मक स्वरूप ने जनमानस की भागीदारी को प्रेरित किया। लोगों में सहनशीलता एवं अधिकारों की मांग के प्रति जुझारूपन आया। नेहरू ने सत्य ही कहा है कि गांधी जी भारत की भूमि पर एक तूफान की तरह आए थे जिसने पूरे भारत को झकझोर दिया।

निष्कर्ष

गांधीजी के विचार ऐसे समय मे सबसे अधिक प्रासंगिक है जब लोग लालच, व्यापक हिंसा और भागदौड भरी जीवन शैली के समाधान खोजने की कोशिश कर रहे है। गांधीजी की अहिंसा और सत्याग्रह की अवधारणा की आज सबसे अध्कि आवश्यकता है क्योंकि यही वह समय है जब मात्र प्रतिशोध के नाम पर किसी की भी हत्या कर दी जाती है और अपने आलोचको को दुश्मन से अधिक कुछ नही समजा जाता स लोकतंत्र मे आलोचना करणा सभी का अध्कार होता है, परंतु आलोचना करणे से पूर्व यह भी आवश्यक है की हम उस व्यक्ति के बारे में अच्छे से पढे और तर्क के आधार पर उसकी आलोचना करे।

संदर्भ

1. रामलाल विवेक, (1996), महात्मा गांधी जीवन और दर्शन, पंचशील प्रकाशन, जयपूर
2. रामजीसिंह एव धर्मराज यादव (सं)1997), गांधी विचार और सामाजिक पुनर्रचना, बनारस
3. वीरेंद्र शर्मा, गांधी विचार दर्शन, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ, 1987
4. चंद्र विपिन, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, नई दिल्ली, 2005
5. ग्रोव्हर बी.एल., अलका यशपाल, आधुनिक भारत का इतिहास, नवीन मुल्यांकन 2005
6. मुजुमदार रमेशचंद्र, रायचौधरी, हेमचंद्र दत्त, कातीकिंकर, भारत का बृहत इतिहास, खंड 3, नई दिल्ली, 2005

पत्रिकाए

1. यंग इंडिया
2. हरिजन